BA-I
Paper-II
Unit-5

Dr Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Topic: ⇒ Leibnitz: God
(लाइबनिज: ईश्वर)

लाइबनिज के दर्शन में ईश्वर का महत्वपूर्ण स्थान है। ईश्वर ही सृष्टि का कर्ता एवं संहारक है। चिदणु का आदि और अंतिम कारण ईश्वर है। सभी चिदणु विकास के क्रम में है। ईश्वर विकास के सर्वोच्च शिखर पर है। सभी चिदणु ईश्वर की तुलना में अपूर्ण अपेक्षाकृत कम क्रियाशील एवं कम शक्तिशाली है। प्रत्येक चिदणु का अंतिम लक्ष्य परम चिदणु (ईश्वर) की अवस्था प्राप्त करना है। सभी चिदणु गवाक्षहीन तथा स्वतंत्र है। ईश्वर इन गवाक्षहीन चिदणुओं के आपसी समन्वय का सूत्रधार है। लाइबनिज के अनुसार ईश्वर परम विभु और स्वतंत्र द्रव्य है परन्तु वह मनमाना आचरण नहीं करता है। वह अपने बनाये गये नियमों के अधीन है।

ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सभी चिदणु कुछ न कुछ निष्क्रिय एवं सूक्ष्म जड़ता से युक्त है। इस प्रकार से ईश्वर चिदणु होते हुए भी अन्य चिदणुओं से भिन्न है। वह परम पूर्ण परमेश्वर है। अन्य प्राणियों की पूर्णता का कारण ईश्वर है वहीं अपूर्णता का कारण स्वयं प्राणी है। लाइबनिज के दर्शन में ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने के लिए चार प्रमाण दिये गये हैं जो अग्रलिखित है।

(i) सत्तामूलक तर्क (Ontological Proof) :→ लाइबनित्ज के अनुसार पूर्ण ईश्वर का विचार ही ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करता है। यह मानना है कि संसार में सभी अपूर्ण एवं सान्त वस्तुओं को देखकर इसके निर्माता के रूप में पूर्ण एवं अनन्त ईश्वर की विचार आता है। इस विचार के अनुसार जो वस्तु है वही ईश्वर है। इसके अनुसार ईश्वर सबसे अधिक पूर्ण सत्ता है। सर्वाधिक पूर्ण तत्व का संप्रत्यय संभव है और के अनुरूप व्यक्तियों को बनता है। देकार्त ने सत्तामूलक तर्क में कहा है कि पूर्ण ईश्वर का ज्ञान ही उसकी सत्ता के लिए प्रमाण है। लाइबनीज पूर्णता के विचार को ही सत्ता का स्रोत माना है। सत्ता ईश्वर की पूर्णता की ओर संकेत करता है। सत्ता ईश्वर के गुणों में एक है। इस प्रकार से पूर्णता के संप्रत्यय से ही ईश्वर की सत्ता प्रमाणित है।

(ii) पर्याप्त कारणता सिद्धान्त (Law of Sufficient Reason) यह सृष्टिमूलक प्रमाण का रूपान्तरण है। सृष्टिमूलक प्रमाण के अनुसार देकार्त ने बतलाया है कि ईश्वर ही सृष्टि का कर्ता है। मनुष्य सीमित है वह असीमित सृष्टि का कर्ता नहीं हो सकता है। लाइबनीत्ज के अनुसार जो वस्तु प्रमाणित हो उसी की सत्ता स्वीकार करना चाहिए। सांसारिक वस्तुओं की सत्ता का पर्याप्त कारण होना चाहिए। कोई वस्तु अकारण नहीं होता है। संसार के सभी वस्तुओं का कारण मानव नहीं हो सकता है। संसार के सभी वस्तुओं का कारण सीमित मानव नहीं असीमित ईश्वर ही हो सकता है। लाइबनीज का मानना है कि कुछ कथन क्षणिक सत्य होते हैं, तो कुछ कथन नित्य सत्य होते हैं। क्षणिक सत्य का आधार भी नित्य सत्य होना चाहिए।

ईश्वर ही नित्य सत्य का आधार है। इस प्रकार से सभी सांसारिक वस्तुओं का पर्याप्त कारण ईश्वर है।

(iii) सनातन सत्य का नियम :- यह ज्ञान संबंधित प्रमाण है। इस प्रमाण का आधार शाश्वत सत्ताएँ हैं। जैसे- मनुष्य मरणशील है, सूर्य पूर्व में उगता है। ऐसे सत्य का आधार आपातिक नहीं हो सकता है। सनातन सत्य से ही ईश्वर की सत्ता प्रमाणित है। ईश्वर ही इसका आधार है।

(iv) पूर्व स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त :- लाइबनीज के अनुसार चिदणु गवाक्षहीन छिद्ररहित तथा पूर्ण है। सभी चिदणु स्वतंत्र एवं क्रियाशील हैं। ये अपने आंतरिक नियमों से संचालित हैं। सृष्टि में स्वरूपता व्यवस्था और नियमबद्धता बनाये रखने के लिए इन स्वतंत्र चिदणुओं में आपसी संबंध का होना आवश्यक है। इन स्वतंत्र चिदणुओं में आपसी समन्वय का सूत्रधार ईश्वर है। ईश्वर ने चिदणुओं को स्वतंत्र बनाते वक्त इस प्रकार का गुण स्थापित किया है कि परस्पर स्वतंत्र होते हुए भी एकता के सूत्र में बंधे रहें। इस प्रकार से संसार में नियम व्यवस्था एकता तथा सामंजस्य का मूल कारण ईश्वर है। यह सामंजस्य ईश्वर ने सृष्टि पूर्व स्थापित किया है। इसलिए इसे पूर्वस्थापित सामंजस्य सिद्धान्त कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

लाइबनित्ज के ईश्वरवाद के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि - लाइबनित्ज का ईश्वरवाद अनेक दार्शनिकों से विशिष्ट है। एक ओर लाइबनित्ज ईश्वर को पूर्ण चिदणु मानता है वहीं दूसरी ओर वह ईश्वर को सभी चिदणुओं का कारण मानता है। परन्तु स्वयं ईश्वर अकारण तथा स्वयम्भु है। यहाँ मतांतर दृष्टिगत है। ईश्वर चिदणुओं की सृजन कर्ता होगा तो चिदणुओं की स्वतंत्रता एवं अनन्तता खंडित होती है। अगर ईश्वर स्वयं चिदणु है तो वह चिदणु का निर्माता नहीं होगा। यहाँ विरोधाभास दृष्टिगत है कि या तो ईश्वर स्वयं चिदणु है या उसके सृजनकर्ता एवं चिदणुओं के समन्वय का कारण है।

ईश्वर को पूर्व स्थापित सामंजस्य का कारण माना गया है। परन्तु यह स्वीकार करने पर ईश्वर को ही एकमात्र निरपेक्ष सत् मानना पड़ेगा। सभी चिदणु आपस में असत् हो जायेंगे। परन्तु लाइबनित्ज चिदणुओं को असत् नहीं मानते हैं। इस प्रकार से चिदणु एवं ईश्वर का संबंध अस्पष्ट है। देकार्त ने ईश्वर को सृष्टिकर्ता माना है। वह ईश्वर को सृष्टि से परे विश्वातित मानता है। लाइबनित्ज संपूर्ण सृष्टि को चेतन एवं ईश्वर की अभिव्यक्ति मानता है। ये निम्नतम से उच्चतम चिदणु की श्रृंखला स्वीकार करते हैं। इस प्रकार लाइबनित्ज सर्वेश्वरवाद एवं ईश्वरवाद दोनों में समन्वय करता है। इस प्रकार वे लाइबनित्ज सर्वज्ञ, शक्तिमान एवं पूर्ण ईश्वर को मानता है जो स्वेच्छाचारी नहीं है। वह नियमों के अन्तर्गत ही कार्य करता है। इसलिए लाइबनित्ज के ईश्वर को निरंकुश राजा नहीं बल्कि लोकतांत्रिक देश का प्रधानमंत्री कहा जाता है।

Scanned with CamScanner